दिनांक :- 25-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डा० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

अंतरस्नातक :- द्वितीय वर्ष या 12वीं कक्षा के लिए

विषय :- इतिहास अनुषांगिक

पत्र :-

इकाई :- तृतीय

अध्याय :- सिंधु घाटी की सभ्यता एंव पुरोहित आवास

पुरोहित आवास :- वृहत्स्नानागार के उत्तर पूर्व में 70.1X23.77 मीटर के आकार के एक विशाल भवन के अवशेष मिलते हैं। इसमें 10 मीटर का वर्गाकार प्रांगण, तीन बरामदे, तथा कई कमरे बने थे कुछ की फर्श पक्की ईंटो की बनायी गयी थी। इस भवन के विशाल आकार-प्रकार तथा स्नानागार से इसकी सन्निकटता को देखते हुए अनुमान किया जाता है कि संभवतः यहाँ प्रधान पुरोहित अपने सहयोगियों के साथ निवास करता था। संभव है यहाँ पुरोहितों का विद्यालय (College of Priests) स्थित रहा हो।

Scanned with CamScanner

सभाभवनः-

दुर्ग के दक्षिण की ओर 27x27 मीटर के आकार का एक वर्गाकार भवन मिलता है जिसे सभा भवन कहा गया है इसमें ईंटों के 20 चौकोर स्तम्भों के अवशेष मिले हैं। इनकी चार कतारें हैं, प्रत्येक में पाँच-पाँच स्तंभ हैं। मुख्य प्रवेश द्वार उत्तर की ओर था संभवतः इन स्तम्भों पर भवन की छत टिकी हुई थी। इस प्रकार यह स्तंभों वाला भवन था। भवन के भीतर बैठने के भिभिन्न चौकियाँ बनाई गई थी मैके के विचार में यहाँ कोई बाजार लगती होगी। लगता है कि इस भवन का उपयोग सार्वजनिक सभाओं के लिये किया जाता था

मोहनजोदड़ो की प्रमुख विशेषता उसकी सड़कें थीं मोहनजोदड़ो की मुख्य सड़क 10.5 मीटर चौड़ी थी जिसे पुराविदों ने राजपथ कहा है। अन्य सड़कों की चौड़ाई 2.75 मीटर से लेकर 3.66 मीटर तक की थी गलियाँ 1.80 मीटर तक चौड़ी होती थी सड़के सीधी दिशा में एक दूसरे को समकोण पर

कटती हुई नगर के अनेक वर्गाकार अथवा चतुर्भुजाकार खण्डों में विभाजित करती थी। सड़कें मिट्टी की बनी थीं किंतु इनकी सफाई की अच्छी व्यवस्था थी। इस पर कूड़ा-करकट एकत्रित करने के लिये स्थान-स्थान पर गड्ढे खोदे जाते अथवा कूड़ा-पात्र रखे जाते थे। हड़प्पा की सड़कों के किनारे इस प्रकार के गड्ढे खुदे हुए मिले हैं। मोहनजोदड़ो की एक सड़क के दोनों किनारों पर चबूतरे बने हुए मिलते हैं। सम्भवतः इन पर बैठकर दुकानदार वस्तुओं की बिक्री किया करते थे। प्रत्येक खण्ड में भवन बने होते थे अधिकांश भवनों में निजी कुआँ स्नानागार होते थे। नगर में नालियों की सुन्दर व्यवस्था थी प्रायः प्रत्येक सड़क तथा गली के दोनों ओर पक्की नालियाँ बनाई गयी थी जिनसे होकर नगर का गंदा पानी निकल जाता था। किसी-किसी स्थान पर बड़ी नालियों के बीच में गड्ढे

Scanned with CamScanner

भी बना दिये जाते थे। जिनमें नाली का कूड़ा-करकट एकत्र होता था। बड़ी नालियों को पत्थर की पटियाओं से ढक दिया जाता था। मकान के कमरों, रसोई, स्नान गृह, शौचालय आदि सभी से निकल कर नालियों को एक बड़ी नाली में जोड़ दिया जाता था। तथा फिर वह बड़ी नाली सार्वजनिक नाली में मिलती थी। स्थान स्थान पर मेनहोल बने होते थे। इन्हें बड़ी-बड़ी ईंटों से ढका जाता था जिन्हें हटाकर नाली को साफ करते थे।

नालियों की यह विस्तृत व्यवस्था सैंधव सभ्यता की अद्भुत विशेषता है जो किसी अन्य समकालीन नगर में नहीं प्राप्त होती। इनकी देखरेख अवश्य ही आधुनिक युग की भाँति नगरपालिकाओं द्वारा की जाती होगी। रोम निवासियों के काल तक किसी भी दूसरी सभ्यता के अंतर्गत सैंधव सभ्यता के समान नालियों का सुप्रबंध

Scanned with CamScanner

देखने को नही मिलता है। अठारहवी शती के पूर्व लन्दन तथा पेरिस जैसे नगरो मे सफाई की इतनी उत्तम व्यवस्था स्थापित नही हो पाई थी।

मकान नालियाँ तथा स्नानगृह अच्छी तरह पकाई गई ईंटो की सहायता से बनते थे। ईंटे चतुर्भुजाकार होती थीं। मोहनजोदड़ो से प्राप्त सबसे बड़ी ईंट 51.43cm×26.27cm ×6.35cm के आकार की है। सामान्यतः 27.94cm×13.97cm ×6.35cm (अनुपात 4:2:1) के आकार की इतनी उत्तम ईंटों का प्रयोग किया गया है। सबसे छोटी ईंट का आकार 24.13×11.05×5.08 cm का है। उल्लेखनीय है कि सिंधु सभ्यता की समकालीन मिस्री सभ्यता मे पक्की ईंटो का प्रयोग नही किया गया है तथा मेसोपोटामिया मे भी इनका सीमित मात्रा में ही प्रयोग मिलता है।

सैन्धव सभ्यता के भवन तीन प्रकार के है - निवास गृह,

Scanned with CamScanner

विशाल भवन तथा सार्वजनिक स्नानागार। यहाँ के छोटे मकानों में दो कमरे होते थे जबकि बड़े मकान महलों के आकार के होते थे। मकानों के दरवाजे गलियों की ओर होते थे। मुख्य सड़क के कोलाहल एवं प्रदूषण से बचने के लिए शायद दरवाजे, खिड़कियाँ एवं रोशनदान सड़कों की ओर न होकर पिछवाड़े खुलते थे प्रत्येक मकान में रसोईघर, आँगन, कुएँ, स्नानागार तथा ढँकी नालियाँ बनी होती थी। मकानों के दरवाजे सम्भवतः लकड़ी के बनते थे और मध्य में न होकर अन्त में लगाये जाते थे। मकानों की छतें भी लकड़ी की बनाई जाती थी जिसपर चढ़ने के लिये पक्की ईंटों की सीढ़ियाँ बनाई जाती थी। मकान एक दूसरे से सटा कर बनाये जाते थे किंतु कभी-कभी दो मकानों के बीच में एक फुट चौड़ा गलियारा भी छोड़ दिया

Scanned with CamScanner

जाता था। मकानों की नींव पक्की ईंटों से भरी जाती थी जिनके ऊपर सीधी दीवार खड़ी होती थी। दीवारों में हवा तथा प्रकाश के लिये पत्थर की जाली लगाई जाती थी इससे सूचित होता है कि हड़प्पा संस्कृति के लोग स्वास्थ्य तथा सफाई के प्रति अत्यंत सजग थे। मकानों की फर्श पक्की नहीं थी बल्कि केवल मिट्टी कूट कर उसके ऊपर कच्ची-पक्की ईंटें बिछाकर ही बनाई जाती थी।

मोहनजोदड़ो के लगभग 130 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में स्थित इस स्थान की खोज 1934 ई० में एन.जी. मजूमदार ने की तथा 1935 ई० में मैके द्वारा यहाँ उत्खनन करवाया गया। सबसे निचले स्तर से सैंधव संस्कृति के अवशेष मिलते हैं। यहाँ की मुख्य सड़क 7.5 मीटर चौड़ी थी। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की भाँति यहाँ भी मकान सड़क के दोनों ओर बनाये गये थे।

Scanned with CamScanner